वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

"प्रकृति कार्यक्रम" 02.08.2022 जवाहर नवोदय विद्यालय, खूंटी, (झारखण्ड)

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत संस्थान के निदेशक के निर्देशन में श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की, उप वन संरक्षक , श्री एस.एन.वैद्य, मु.त.अ., श्री बी.डी.पंडित त.अ. एवं श्री सूरज कुमार, व.त.स. के एक दल द्वारा दिनांक 02.08.2022 को जवाहर नवोदय विद्यालय,खूंटी (झारखण्ड) में प्रकृति कार्यक्रम आयोजित कर विद्यालय के लगभग 65 (नवम एवं दशम वर्ग) के छात्र-छात्राओं एवं 4-5 शिक्षको को पर्यावरण के प्रति जागरुक किया गया, जिसमे पर्यावरण के दुष्परिणाम, पर्यावरण में वनों की भूमिका, वन संरक्षण, वन वर्धन एवं पर्यावरण प्रदूषण के कारण और निवारण की चर्चा की गई।

कार्यक्रम का संचालन करते हुये श्री बी.डी. पंडित तकनीकी अधिकारी ने पर्यावरण प्रदूषण के कारणों को समझाते हुए प्रदूषण निवारण के कई सुझाव प्रस्तुत किया। उन्होने बताया कि कार्बन उत्सर्जन को कम करना एवं कार्बन शोषण का उपाय करना पर्यावरण, प्रदूषण के निवारण के लिए काफी आवश्यक है। रासायनिकों एव कीटनाशकों का उपयोग मृदा प्रदूषण का मुख्य कारण है। रासायनिक उर्वरको की जगह जैविक उर्वरक का उपयोग कर मृदा प्रदूषण को कम किया जा सकता है।

आयोजित प्रकृति कार्यक्रम की झलकियां

संस्थान की श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की, उप वन संरक्षक ने पर्यावरण के नुकसान करनेवाले विभिन्न कारकों का विस्तार से वर्णन किया एवं वानिकी का विकास कर पर्यावरण संरक्षण की चर्चा की। अमेजन जंगल (विश्व का फेफड़ा) का उदाहरण देते हुए उन्होने आये दिन जंगलों मे लग रहे आग को दुखद बताया और इसे मानव निर्मित कारणों मे से एक बताया एवं उपलब्ध स्थल क्षेत्रों में वनों के आवश्यक विस्तार का प्रतिशत, भारतीय वनो एव झारखण्ड के वनों की स्थिति आदि को बताते हुए उन्होने मेगास्कर एवं डोडो पक्षी के विनाश के कारण कुछ वन प्रजातियों का पुनर्जन्म प्रभावित होना जैसे वन वन्य जीव एवं जैव विविधता को विस्तार से समझाया। COP सम्मेलन, रियो डी. जनारियो (Rio De Janerio) पृथ्वी सम्मेलन आदि की चर्चा करते हुए उन्होने बताया कि पारिस्थितिक तंत्र को बनाये रखने के लिए जीवो द्वारा खाद्य श्रृखला का बना रहना आवश्यक है। कुल भौगोलिक क्षेत्र का 4% संरक्षित क्षेत्र होना आवश्यक है। राष्ट्रीय उद्यान, सेंचुरी, सामुदायिक संरक्षित क्षेत्र एवं सुरक्षित क्षेत्रों की आवश्यकता बताते हुए बाघों की गिनती के तरीकों को भी बताया। विद्यालय के राहुल, सुधा, मुस्कान, पम्मी अविनाश आदि दर्जनो छात्र-छात्राओं के प्रश्नों का उत्तर संतोषजनक श्रीमती तिर्की द्वारा दिया गया।

संस्थान के श्री एस.एन.वैद्य ने पर्यावरण-प्रदूषण एवं उसके निदान के लिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण कर पृथ्वी को बचाने पर चर्चा किया एवं विद्यार्थियों से आश्वस्त किया कि पौध लगाकर उसे संरक्षण करें|

श्री सूरज कुमार ने पर्यावरण संरक्षण में वनों की भूमिका से विद्यार्थियों को अवगत कराया।

विद्यालय की श्रीमती उषा मिश्रा, कुमारी अनुपम, विश्वनाथ लकडा आदि शिक्षकों ने संस्थान का आभार व्यक्त करते हुए अपनी - अपनी बातें रखी। धन्यवाद एव कार्य की समापन की घोषणा श्री वास्को श्याम सुंदर ने किया।कार्यक्रम की सफलता में श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की, श्री एस.एन.वैद्य, श्री बी.डी.पंडित ,एवं श्री सूरज कुमारका सराहनीय योगदान रहा।

प्रकृति कार्यक्रम

आयोजित प्रकृति कार्यक्रम की झलकियां

आज़ादी का अमृत महोत्सव

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)